

स्थापत्य विरोधाभास और सांस्कृतिक अभिसरण: अयोध्या में बहू बेगम का मकबरा और गुलाब बाड़ी का एक तुलनात्मक अध्ययन

सरिता सिंह

भित्तिचित्र, मंदिर एवं स्थापत्य इतिहास, अयोध्या में शोधकर्ता
सहायक आचार्य, डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

अमूर्त

यह पेपर अवध में दो महत्वपूर्ण अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के शुरुआती नवाबी स्मारकों के बीच वास्तुशिल्प और सांस्कृतिक अंतर की जांच करता है: फैजाबाद में बहू बेगम का मकबरा और अयोध्या में गुलाब बाड़ी। यद्यपि दोनों स्मारक अवध के नवाबों की राजनीतिक और सांस्कृतिक दुनिया के भीतर उभरे, वे विभिन्न वास्तुशिल्प उद्देश्यों, संरक्षण के रूपों और शक्ति और स्मृति की अभिव्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। 1816 में बना बहू बेगम का मकबरा, महिला शाही संरक्षण से जुड़ी स्मारकीय वास्तुकला का एक उल्लेखनीय उदाहरण है और नवाब शुजा-उद-दौला की पत्नी बहू बेगम की याद दिलाता है। नवाब शुजा-उद-दौला द्वारा निर्मित गुलाब बाड़ी, एक मकबरे, चारबाग उद्यान और उद्यान-महल परिसर को जोड़ती है, जो एक ही स्थानिक सेटिंग के भीतर अंत्येष्टि, आवासीय और मनोरंजक कार्यों को एक साथ लाती है।

इस पेपर में, मेरा लक्ष्य अवध के स्थापत्य और सांस्कृतिक परिदृश्य के भीतर दो अलग लेकिन परस्पर जुड़े स्मारकों के रूप में बहू बेगम का मकबरा और गुलाब बाड़ी की तुलनात्मक जांच करना है। मैं यह खोज कर विशुद्ध रूप से शैलीगत तुलना से आगे बढ़ना चाहता हूँ कि कैसे उनका स्थानिक रूप, संरक्षण, अलंकरण और परिदृश्य के साथ संबंध स्मृति, लिंग, शक्ति और नवाबी पहचान के विभिन्न विचारों को दर्शाते हैं। इस तुलना के माध्यम से, मैं दोनों स्मारकों के बीच कम जांचे गए सांस्कृतिक और स्थानिक अंतर को उजागर करना चाहता हूँ और फैजाबाद-अयोध्या की स्थापत्य विरासत की अधिक सूक्ष्म समझ प्रदान करना चाहता हूँ।

वास्तुशिल्प विश्लेषण, सांस्कृतिक व्याख्या और ऐतिहासिक और अभिलेखीय स्रोतों के अध्ययन के माध्यम से, यह पेपर जांच करता है कि कैसे दो स्मारक अधिकार, स्मृति, लिंग और नवाबी पहचान के विभिन्न विचारों को व्यक्त करते हैं। उनकी तुलना से पता चलता है कि अवध के स्थापत्य परिदृश्य को इंडो-इस्लामिक शैली की एक समान अभिव्यक्ति के रूप में नहीं समझा जा सकता है। इसके बजाय, ये स्मारक वास्तुकला, संरक्षण, परिदृश्य, सामाजिक प्रथाओं और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बीच अधिक जटिल संबंध प्रकट करते हैं। अध्ययन में अवध की स्थापत्य विरासत को समझने में महिला संरक्षण के महत्व और उद्यानों के सांस्कृतिक महत्व की जांच पर भी प्रकाश डाला गया है।

1. परिचय

अवध के ऐतिहासिक परिदृश्य, विशेष रूप से फैजाबाद और अयोध्या¹ के शहरों में वास्तुशिल्प अवशेषों का एक समृद्ध भंडार है जो नवाबी काल के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विकास को दर्शाता है। इन स्मारकों में, बहू बेगम का मकबरा और गुलाब बाड़ी विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे वास्तुकला, संरक्षण, स्थानिक संगठन और स्मृति के स्मरणोत्सव के दो अलग-अलग दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यद्यपि दोनों स्मारक एक ही व्यापक सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवेश से संबंधित हैं, उनके वास्तुशिल्प रूप और कार्य निर्मित स्थान के माध्यम से शक्ति और पहचान व्यक्त करने के तरीकों में महत्वपूर्ण अंतर प्रकट करते हैं।

1816 में बना बहू बेगम का मकबरा, नवाब शुजा-उद-दौला की पत्नी बहू बेगम की कब्र के रूप में बनाया गया था। इसका विशाल पैमाना और प्रमुख वास्तुशिल्पीय उपस्थिति इसे क्षेत्र से जुड़ी कई अन्य संरचनाओं से अलग करती है। इसके अंत्येष्टि समारोह से परे, स्मारक को महिला संरक्षण के इतिहास और वास्तुकला के माध्यम से शाही स्थिति के प्रतिनिधित्व के संबंध में भी समझा जा सकता है। इसका भव्य रूप दर्शाता है कि कैसे वास्तुकला न केवल दफनाने की जगह के रूप में बल्कि व्यक्तिगत स्मृति और सामाजिक प्रतिष्ठा को संरक्षित करने के साधन के रूप में भी काम कर सकती है।

नवाब शुजा-उद-दौला के अधीन बनी गुलाब बाड़ी एक विशिष्ट वास्तुशिल्प अवधारणा प्रस्तुत करती है। यह परिसर एक मकबरे के साथ चारबाग उद्यान और एक उद्यान-महल की सेटिंग को जोड़ता है। इसका संगठन अंत्येष्टि, आवासीय, औपचारिक और मनोरंजक कार्यों को एक साथ लाता है, जो नवाब संस्कृति के भीतर उद्यानों और प्राकृतिक स्थलों के महत्व को दर्शाता है। मकबरे और उसके आसपास के बगीचे के बीच का संबंध एक स्थानिक वातावरण बनाता है जिसमें मृत्यु, स्मरण, अवकाश और शाही जीवन एक ही वास्तुशिल्प सेटिंग में मौजूद होते हैं।

इन दोनों स्मारकों की तुलना महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐतिहासिक संदर्भ में उनकी समानताएं वास्तुशिल्प इरादे और सांस्कृतिक अर्थ में महत्वपूर्ण अंतर छिपाती हैं। जबकि बहू बेगम का मकबरा स्मारकीय स्मरणोत्सव और शाही स्मृति के प्रतिनिधित्व पर अधिक जोर देता है, गुलाब बारी वास्तुकला, परिदृश्य, अवकाश और पवित्र स्मरण के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित करता है। उनके मतभेद वास्तुशिल्प संरक्षण में लिंग की भूमिका की जांच करने

¹ कन्नौज राज्य अयोध्या में बना, जिसे तब अवध कहा जाता था, 11वीं और 12वीं सदी के दौरान। यह इलाका बाद में दिल्ली सल्तनत, जौनपुर राज्य और 16वीं सदी में मुगल साम्राज्य में शामिल हो गया। अवध को 18वीं सदी की शुरुआत में कुछ हद तक आज़ादी मिली, लेकिन 1764 में यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन हो गया। 1856 में इसे अंग्रेजों ने अपने कब्जे में ले लिया, और इस कब्जे और बाद में खानदान की ज़मीन के रेवेन्यू पाने वालों के अधिकारों के नुकसान ने 1857 में भारतीय विद्रोह के कारणों में से एक बना। अवध को 1877 में आगरा प्रेसीडेंसी के साथ मिलाकर नॉर्थ-वेस्टर्न प्रोविंस और बाद में यूनाइटेड प्रोविंस ऑफ आगरा और अवध बनाया गया, जो अब उत्तर प्रदेश राज्य है। (एनसाइक्लोपीडिया 2026)

का अवसर भी प्रदान करते हैं, विशेष रूप से उन तरीकों से जिनमें महिला शाही संरक्षण स्मारकीय स्थान को आकार दे सकता है।

इसलिए यह पेपर दो स्मारकों की उनके स्थानिक संगठन, वास्तुशिल्प चरित्र, अलंकरण, परिदृश्य डिजाइन, संरक्षण और प्रतीकात्मक अर्थों के माध्यम से जांच करता है। यह उन्हें अवध के व्यापक वास्तुशिल्प इतिहास के भीतर स्थित करता है और तर्क देता है कि इस क्षेत्र की निर्मित विरासत को इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के एकल या समान मॉडल के माध्यम से नहीं समझा जा सकता है। इसके बजाय, ये स्मारक उन विविध तरीकों को प्रदर्शित करते हैं जिनमें वास्तुकला ने नवाबी काल के दौरान स्मृति, पहचान, अधिकार और सांस्कृतिक जीवन के निर्माण में भाग लिया था।

2. ऐतिहासिक संदर्भ: नवाबी संरक्षण और सांस्कृतिक बहुलता



Figure 1 अवध के नवाब शुजाउद्दौला , चार बेटों, जनरल बार्कर और दूसरे मिलिट्री अधिकारियों के साथ। (विकिपीडिया)

अयोध्या² एक क्षेत्र, एक पूर्व प्रांत और एक सांस्कृतिक क्षेत्र है जो अपनी समृद्ध भाषा, विरासत, इतिहास और स्थापत्य शैली के लिए जाना जाता है। यह उत्तर प्रदेश के 12 पूर्वोत्तर जिलों के एक समूह को संदर्भित करता है, जो नेपाल सीमा और गंगा नदी के बीच स्थित है। देवपुरी के नाम से मशहूर अयोध्या, देवताओं की नगरी, पुराने समय से ही अलग-अलग धर्मों, कला और आर्किटेक्चर के संगम के लिए मशहूर रही है। अयोध्या हमेशा अलग-अलग समय में कई शासकों के अधीन रही है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार, अयोध्या को विवस्वान (सूर्य) के बेटे वैवस्वत मनु ने बसाया था।

² अवध के खान के नवाब वारिस (वारिस) ने वर्तमान शहर की आधारशिला रखी। उन्होंने अयोध्या में अपना निवास स्थान "किला मुबारक" के रूप में लखमन घाट पर बनाया। ओबदुल मंसूरी खान (सआदत खान के बेटे) को सफदरजंग के नाम से जाना जाता है, ने फैजाबाद शहर की स्थापना की और फैजाबाद शहर और अयोध्या से सटे वर्तमान छावनी स्थान में अपना सैन्य मुख्यालय बनाया। अवध की नई राजधानी फैजाबाद को सफदरजंग के बाद नवाब सिराज उद्दौला ने 1755 ईस्वी में बनवाया था। सिराजुद्दौला ने फैजाबाद कैंट के उत्तर में "चट्टा कलकत्ता" नामक एक किला भी बनवाया। अपने शासन के दौरान फैजाबाद, ऊध की पुरानी प्रसिद्धि के लिए बढ़ा और समृद्धि के मामले में दिल्ली के बराबर माना जाता था। फारस, चीन और यूरोप के व्यापारियों ने दौरा किया और पैसा पानी की तरह बह गया। 1774 ई। में बक्सर की लड़ाई और अंग्रेजों द्वारा अवध की विजय ने नवाब आसिफुद्दौला को 26 जनवरी 1775 ई। को अवध की राजधानी लखनऊ में स्थानांतरित करने के लिए बनाया। अंग्रेजों ने औपचारिक रूप से फैजाबाद कैंट की स्थापना की। 18 वीं शताब्दी (1856 ई।) की तीसरी तिमाही में। ब्रिटिश इन्फैंट्री द्वितीय विश्व युद्ध तक छावनी में स्थित थी। किसी भी किले/ किले की अनुपस्थिति किसी भी बड़ी लड़ाई की अनुपस्थिति को स्थापित करती है जो ऊध और अंग्रेजों के बीच फैजाबाद में लड़ी गई थी। (मंत्रालय n.d.)

शुरुआती अयोध्या पर राज करने वालों में सूर्यवंशी (इक्ष्वाकु), चंद्रवंशी राजा प्रमुख थे। महाभारत काल के वृहद्रथ के बाद यह शहर मगध के मौर्य, शुंग, शिशुनाग, गुप्त, कन्नौज के गुर्जर प्रतिहार, दिल्ली के गहड़वाल सम्राटों, मुगलों, नवाबों, वज़ीरों और स्थानीय शासकों के अधीन रहा। 18वीं सदी की शुरुआत में शहर को कुछ हद तक आज़ादी मिली, लेकिन 1764 में यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आ गया और 1856 में अंग्रेजों ने अयोध्या पर पूरा कब्ज़ा कर लिया। आर्कियोलॉजिकल सबूतों के आधार पर अयोध्या पर राज करने वाले शासकों के बारे में जानकारी मिलती है। यहां खुदाई के नतीजे में, तीसरी सदी BC में मौर्य सम्राट अशोक के शासनकाल में बनी एक बौद्ध इमारत की बड़ी ईंट की दीवार मिली। पुष्यमित्र शुंग के बाद, पहली सदी BC का धनदेव का एक शिलालेख मिला है। इन राजाओं की ऐतिहासिकता का सबूत देव वंश के राजाओं के सिक्कों की खोज से मिलता है, जिसमें धनदेव भी शामिल हैं, जिनके शिलालेख में उन्हें कोसल (कोसलाधिपति) का राजा बताया गया है। देव राजाओं के बाद, साकेत पर दत्ता कुषाण और मित्र राजाओं का राज था। चौथी सदी के बाद, अयोध्या गुप्तों के कंट्रोल में आ गई, जिसका पता गुप्त काल के सिक्कों और 436 AD (कुमारगुप्त काल) के कर्म दंड शिलालेख से चलता है। मौखरी वंश ने छठी सदी में राज किया होगा, जिनके सिक्के आस-पास के इलाके में मिले हैं। हर्ष के साम्राज्य के पतन के बाद, अयोध्या पर यशोवर्मन और गुर्जर प्रतिहार का राज था। गहड़वाल वंश ने 11वीं सदी में इस इलाके में वैष्णव धर्म को बढ़ावा दिया। 1226 AD में, अयोध्या दिल्ली सल्तनत के तहत अवध प्रांत की राजधानी बन गई। बाद में, अयोध्या पर मुगलों और अंग्रेजों का राज रहा। अयोध्या, फैजाबाद और लखनऊ तीन अलग-अलग शहर हैं जो हमेशा से अवध के नवाब और वज़ीर की राजधानी रहे हैं। अवध क्षेत्र की सत्ता तीन प्रमुखों के पास थी

पहले नवाब सआदत खान (1722-1739), दूसरे, सफ़दरजंग (1739-1754), और तीसरे, शुजा-उद-दौला (1754-1775), जो वंशानुगत रूप से इस पद पर थे। शुजा-उद-दौला अपने शुरुआती दिनों में लखनऊ में रहते थे, लेकिन 1764 में बक्सर की लड़ाई हारने के बाद, वह अयोध्या आ गए और उन्होंने अयोध्या से तीन मील दूर शहर का नाम "फैजाबाद" रखा और इसे अपनी राजधानी बनाया। नवाब के समय में, नवाब शुजा-उद-दौला के दरबारी मुंशी मोहम्मद फैज़ बख्श के नाम पर शहर का नाम "फैज़ाबाद" रखा गया था। 1775 ई. में शुजा-उद-दौला की मृत्यु के बाद, उनके बेटे और चौथे नवाब, आसफ़-उद-दौला (1775-1797) ने फैजाबाद छोड़ दिया और स्थायी रूप से लखनऊ चले गए, लेकिन उनकी दादी, नवाब बेगम और उनकी मां, बहू बेगम (उन्मत्तुज्जोहरा बानो) ने फैजाबाद में सत्ता संभाली। 1816 ई. में बहू बेगम की मृत्यु के बाद, उनके बेटे आसफ़-उद-दौला ने फैजाबाद छोड़ दिया और लखनऊ का नया शहर स्थापित किया और इसे अपनी राजधानी बना लिया। हिंदू पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, इस शहर को "लक्ष्मणपुरी" के नाम से जाना जाता था, जिसकी स्थापना राम के भाई लक्ष्मण ने की

थी। इसके बाद फैजाबाद की हालत खराब हो गई और 1856 ई. में अवध क्षेत्र पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया।

3. स्थापत्य का समग्र अवलोकन



Figure 2 बहू बेगम का मकबरा



Figure 3 नवाब शुजा-उद-दौला का मकबरा

अवध के नवाब, जिन्होंने शुरू में मुगल साम्राज्य के तहत राज्यपाल के रूप में कार्य किया, ने धीरे-धीरे इस क्षेत्र में एक स्वतंत्र राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान स्थापित की। उनकी दरबारी संस्कृति को फ़ारसी परंपराओं, शिया धार्मिक प्रथाओं, मुगल शाही परंपराओं और क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रभावों के संयोजन से आकार दिया गया था। ये प्रभाव उनके संरक्षण में विकसित वास्तुकला, उद्यानों, धार्मिक इमारतों और शहरी स्थानों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

लखनऊ के नवाबी सत्ता का प्रमुख केंद्र बनने से पहले, फैजाबाद ने अवध की राजधानी के रूप में कार्य किया और एक महत्वपूर्ण राजनीतिक, सांस्कृतिक और स्थापत्य केंद्र के रूप में विकसित हुआ। नवाब शुजा-उद-दौला और उनके उत्तराधिकारियों के तहत, शहर और इसके आसपास के क्षेत्रों में कई महलों, उद्यानों, धार्मिक इमारतों और अत्येष्टि स्मारकों का निर्माण हुआ। ये संरचनाएं न केवल नवाबी दरबार की संपत्ति और अधिकार को दर्शाती हैं बल्कि क्षेत्र के बदलते सांस्कृतिक चरित्र को भी दर्शाती हैं।

बहू बेगम, जो मूल रूप से एक मुगल राजकुमारी और नवाब शुजा-उद-दौला की पत्नी थीं, का अवध के राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान था। उन्हें धर्मार्थ गतिविधियों और वास्तुकला और अन्य सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण में उनकी भागीदारी के लिए पहचाना गया। 1816 में उनकी मृत्यु के बाद उनके निजी खजाने की धनराशि से फैजाबाद में उनकी समाधि का निर्माण कराया गया। यह स्मारक अपने विशाल पैमाने और महिला शाही संरक्षण से जुड़े होने के कारण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इसकी भव्य ऊंचाई और वास्तुकला की उपस्थिति इसे क्षेत्र के सबसे प्रमुख इस्लामी स्मारकों में से एक बनाती है।

इसके विपरीत, नवाब शुजा-उद-दौला से जुड़ी गुलाब बाड़ी वास्तुकला, परिदृश्य और शाही जीवन के बीच एक अलग संबंध प्रस्तुत करती है। गुलाब बाड़ी नाम, जिसका अर्थ है "गुलाब का बगीचा", परिसर के भीतर बगीचे के महत्व को दर्शाता है। स्मारक में सावधानी से नियोजित उद्यान सेटिंग के भीतर नवाब की कब्र है और इसमें भूदृश्य वाली जगह के साथ अंत्येष्टि वास्तुकला का मिश्रण है। यह परिसर दफन स्थल के रूप में अपनी भूमिका तक ही सीमित नहीं था; इसके बगीचे और आसपास के स्थान दरबारी गतिविधियों, सामाजिक समारोहों और औपचारिक प्रथाओं से भी जुड़े थे।

इसलिए ये दोनों स्मारक नवाबी काल के दौरान अवध में विकसित हुई विविध वास्तुकला और सांस्कृतिक प्रथाओं के मूल्यवान उदाहरण प्रदान करते हैं। जबकि बहू बेगम का मकबरा स्मारकीयता, शाही स्मृति और महिला संरक्षण पर जोर देता है, गुलाब बाड़ी अंत्येष्टि वास्तुकला, उद्यान डिजाइन, अदालत जीवन और अनुष्ठान अभ्यास के बीच घनिष्ठ संबंध को प्रदर्शित करता है। उनकी तुलना से उन विभिन्न तरीकों का पता चलता है जिनमें वास्तुकला का उपयोग अधिकार व्यक्त करने, स्मृति को संरक्षित करने और नवाबी अवध के सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देने के लिए किया गया था।

3.1 बहू बेगम का मकबरा

बहू बेगम का मकबरा फैजाबाद में नवाबी काल के सबसे भव्य स्मारकों में से एक है और इसे अवध के नवाबों से जुड़ी सबसे ऊंची ऐतिहासिक इमारतों में से एक माना जाता है। जवाहर पार्क के पश्चिम में इलाहाबाद रोड पर स्थित, यह मकबरा बेगम उन्मुतुजोहरा बानू की याद में बनाया गया था, जो नवाब शुजा-उद-दौला की पत्नी, बहू बेगम के नाम से मशहूर थीं।

बहू बेगम, नवाब मुतमन-उद-दौला मुहम्मद इसहाक की इकलौती जायज़ बेटी थीं, जो मुगल बादशाह मोहम्मद शाह के दरबार में एक अमीर थे। उनका नाम उम्मत-उज़्ज़ ज़ोहरा था, लेकिन वह अवध के नवाब शुजा-उद-दौला की पत्नी बहू बेगम के नाम से मशहूर हैं। 1816 में उनकी मृत्यु के बाद उन्हें कब्र में दफनाया गया था।³

स्मारक का निर्माण कई चरणों में पूरा हुआ। बहू बेगम की मृत्यु के बाद, उनके दरबारी और सलाहकार दारब अली खान ने मकबरे की जिम्मेदारी ली और 1816 में लगभग 3 लाख रुपये की लागत से इसकी नींव रखी, शुरुआत में मंच का निर्माण किया। बाकी काम 1903 में बेगम के वकील पनाह अली और उनकी गोद ली हुई बेटी के बेटे मिर्जा हैदर की देखरेख में पूरा हुआ।



Figure 4 बहू बेगम की 18वीं सदी की पेंटिंग।
सोर्स - गूगल इमेजेज

³ (Safvi n.d.)

वास्तुकला की दृष्टि से, मकबरा मुगल, ईरानी और अवधी प्रभावों को जोड़ता है। इसमें दो बड़े दो मंजिला प्रवेश द्वार हैं। पहला प्रवेश द्वार, बड़े प्रांगण के पूर्वी हिस्से में स्थित है, जिसमें भूतल पर तीन बड़े मेहराब और ऊपरी मंजिल पर तीन केंद्रीय द्वार हैं। प्रवेश द्वार को नक्काशीदार पुष्प रूपांकनों, पत्तियों, लताओं, आलों, झरोखों और खिड़कियों से



Figure 5 बहू बेगम का मकबरा, फैजाबाद।

सजाया गया है। झरोखे राजस्थानी इमारतों से जुड़ी वास्तुशिल्प विशेषताओं को दर्शाते हैं जिन्हें बाद में मुगल वास्तुकला में शामिल किया गया, खासकर अकबर, जहांगीर और शाहजहां के शासनकाल के दौरान। सजावटी कार्यक्रम में बार-बार मछली के रूपांकनों को भी शामिल किया जाता है, जो अवध के नवाबों से जुड़ा एक महत्वपूर्ण प्रतीक है और शुभता का संकेत माना जाता है।

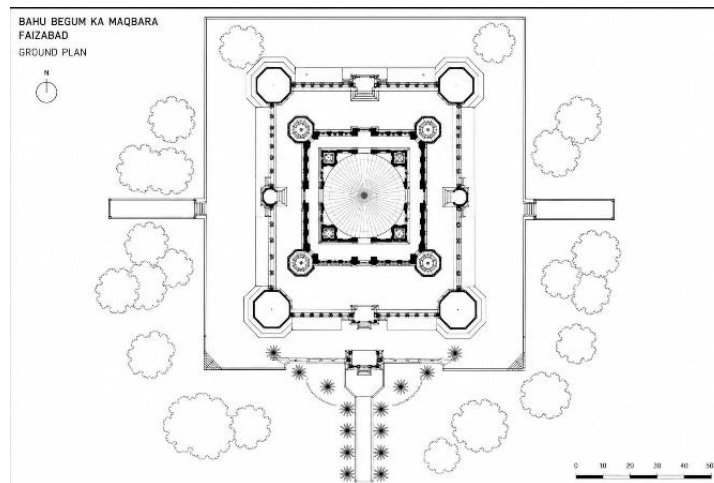


Figure 6 वास्तुशिल्पीय भू-योजना

दूसरा प्रवेश द्वार भी एक बड़ी, आयताकार, दो मंजिला संरचना है जो चारदीवारी से जुड़ी हुई है और मकबरे को मुख्य प्रवेश द्वार प्रदान करती है। इसमें अर्धवृत्ताकार और मुगल आकृतियों को मिलाकर दो बड़े सजाए गए मेहराब हैं। आंतरिक और बाहरी दोनों सतहों

पर फूलों की लताएँ और मछली की आकृतियाँ उकेरी गई हैं। मुख्य प्रवेश द्वार के दोनों ओर बड़े नक्काशीदार झरोखे हैं जिनके शीर्ष पर छतरी जैसी आकृतियाँ हैं, साथ ही पत्थर की जाली भी हैं। दोनों ओर संकरी सीढ़ियाँ प्रवेश द्वार के ऊपरी हिस्सों तक जाती हैं, जबकि दरबारियों के निवास के लिए पत्थर के खंभों वाले छोटे हॉल उपलब्ध कराए गए थे।

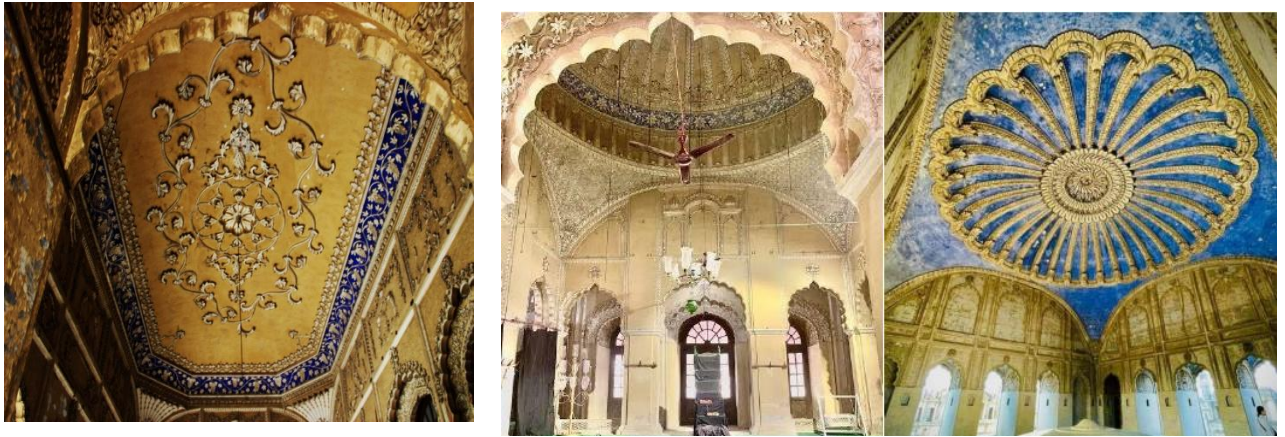


Figure 7 मकबरे की छत पर प्लास्टर का काम

मकबरा अवधी शैली में निर्मित एक चारदीवारी से घिरा हुआ है, जिसमें कई छोटे और बड़े आले और मेहराबदार सजावटी तत्व हैं। स्मारकीय प्रवेश द्वार, नक्काशीदार अलंकरण, झरोखे, जालियाँ, पुष्प रूपांकनों और मछली की छवि का संयोजन स्मारक को विशिष्ट वास्तुशिल्प चरित्र प्रदान करता है और फैजाबाद में नवाबी वास्तुकला में मौजूद विभिन्न प्रभावों को प्रदर्शित करता है।

गुलाब बाड़ी और शुजा-उद-दौला का मकबरा



Figure 8 और शुजा-उद-दौला का मकबरा

गुलाब बाड़ी, जिसका अर्थ है "गुलाबों का बगीचा", अवध के तीसरे नवाब शुजा-उद-दौला (1753-1775) से जुड़ा एक प्रमुख ऐतिहासिक स्मारक है। नवाब का मकबरा फैजाबाद के चौक घंटा बाजार के पास स्थित उद्यान परिसर में स्थित है। यह स्मारक वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा संरक्षित है।

मकबरे के परिसर में दो बड़े बाहरी प्रवेश द्वार हैं और तीसरा प्रवेश द्वार बाड़े से जुड़ा हुआ है। पहले दो प्रवेश द्वार एक समान वास्तुशिल्प डिजाइन का पालन करते हैं और तीन बड़े मेहराबों में विभाजित हैं, बड़े नुकीले मेहराबों के भीतर इस्लामी मेहराबें रखी गई हैं। दोनों प्रवेश द्वार दो मंजिला हैं और इनमें मुकनस, हीरे-कट अलंकरण, नक्काशीदार पुष्प डिजाइन, खिड़कियां, झरोखे और नवाबी वास्तुकला से जुड़े सजावटी तत्व शामिल हैं। उनके ऊपरी खंडों में आंगन, बरामदे और छोटे कमरे हैं जो सजे हुए गोलाकार स्तंभों पर टिके हुए हैं। छोटे बल्बनुमा गुंबद और मेहराबदार प्राचीर प्रवेशद्वारों को और अधिक आकर्षक बनाते हैं।

तीसरा प्रवेश द्वार, जो चारदीवारी से जुड़ा हुआ है, मुख्य मकबरे परिसर तक पहुंच प्रदान करता है। इसमें दो मंजिलें हैं जिनमें सजे हुए मेहराब, खिड़कियाँ, आले और खंभे हैं और बरामदे के साथ एक बड़ा आंतरिक हॉल है। परिसर के प्रवेश द्वार के पास एक मस्जिद और इमामबाड़ा स्थित हैं। इन संरचनाओं में बल्बनुमा गुंबद और ऊंची मीनारें शामिल हैं, जबकि गुंबददार छतों वाले अष्टकोणीय मंडप पास में स्थित हैं।

शुजा-उद-दौला का मकबरा चारबाग के केंद्र में स्थित है, एक फ़ारसी शैली की उद्यान

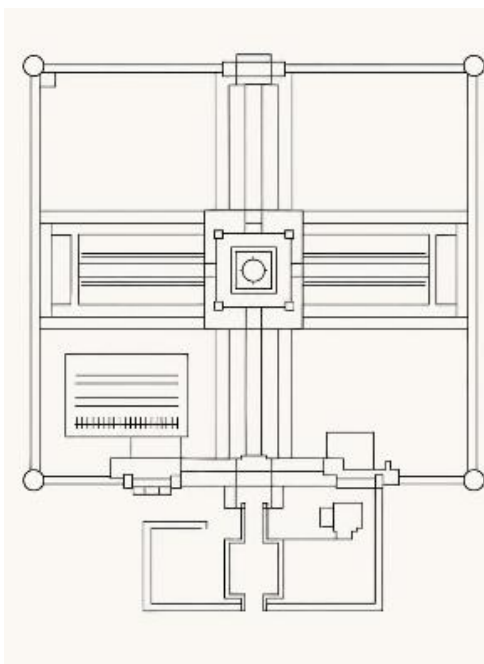


Figure 9 वास्तुशिल्पीय भू-योजना

व्यवस्था जिसे मुगल और बाद में इंडो-इस्लामिक वास्तुकला में व्यापक रूप से अपनाया गया था। मकबरा एक ऊंचे आयताकार मंच पर स्थित है और इसमें तीन मंजिलें हैं जिसके शीर्ष पर एक बड़ा बल्बनुमा गुंबद है। भूतल पर एक बड़ा केंद्रीय कक्ष है जो छोटे कमरों और स्तंभों वाले बरामदों से घिरा हुआ है। दूसरी मंजिल निचले स्तर से थोड़ा पीछे की ओर स्थापित है और इसमें एक केंद्रीय कक्ष है जो अर्ध-वृत्ताकार और नुकीले मेहराबदार बरामदे से घिरा हुआ है। चारों कोनों को गुंबददार शीर्ष वाली ऊंची मीनार जैसी संरचनाओं द्वारा चिह्नित किया गया है। पत्थर की जालियां, पैरापेट और छोटे गुंबद इस स्तर को

और भी सजाते हैं।

तीसरी मंजिल में एक केंद्रीय कक्ष है जो एक बड़े बल्बनुमा गुंबद से ढका हुआ है। गुंबद का निचला हिस्सा कमल की पंखुड़ियों से बना है, जबकि ऊपरी हिस्सा उल्टे कमल और फूलदान जैसी पंखुड़ियों से बना है। मेहराबों और दीवारों पर पुष्प रूपांकनों, पत्तियों, फूलों के गुच्छों और लताओं की बड़े पैमाने पर नक्काशी की गई है, जो स्मारक के विशिष्ट सजावटी चरित्र में योगदान करते हैं।

मकबरे के आसपास का बगीचा परिसर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। चार मुख्य जल चैनल बगीचे से होकर फैले हुए हैं, जबकि मकबरे के दोनों ओर छोटे तालाब और फव्वारे लगाए गए हैं। यह व्यवस्था पानी, बगीचों और स्वर्ग के लंबे समय से चले आ रहे फारसी और मुगल संबंध को दर्शाती है। नहर-ए-वाहिश्त, या "स्वर्ग की धारा" की अवधारणा ऐसे चैनलों के माध्यम से व्यक्त की गई थी, जो प्रतीकात्मक अर्थ और बगीचे के भीतर शीतलता और शांति की भावना दोनों प्रदान करती थी।



Figure 10 मकबरे का भूतल हॉल

परिसर के पीछे संभवतः एक बारादरी है, जिसमें दो मंजिला कमरे और छत पर छोटे गुंबद हैं। पूरा परिसर नुकीले मेहराबों, कमरों, सीढ़ियों और सजावटी गुंबददार तत्वों वाली एक सीमा दीवार से घिरा हुआ है। साथ में, प्रवेश द्वार, उद्यान, जल चैनल, मस्जिद, इमामबाड़ा और मकबरा एक एकीकृत वास्तुशिल्प परिसर बनाते हैं जो फैजाबाद में नवाबी वास्तुकला के विशिष्ट चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है।

4. स्थानिक एवं प्रतीकात्मक अंतर

4.1 स्थानिक लेआउट और अभिविन्यास

बहू बेगम का मकबरा एक मजबूत ऊर्ध्वाधर चरित्र वाला है। इसकी ऊंचाई इसे आसपास के परिदृश्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता बनाती है और स्मारक को शहर के भीतर एक प्रमुख स्थान देती है। यह संरचना एक अष्टकोणीय आधार से निकलती है और एक विशिष्ट पिरामिड आकार बनाती है। इमारत का ऊपर की ओर बढ़ना इसे ऊंचाई और स्थायित्व का एहसास देता है और अंत्येष्टि स्मारक के रूप में इसके कार्य से निकटता से जुड़ा हुआ है।

गुलाब बाड़ी की एक अलग स्थानिक व्यवस्था है। मुख्य रूप से मकबरे की ऊंचाई पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, परिसर अपने चारबाग उद्यान के माध्यम से क्षैतिज रूप से फैला हुआ है। बगीचे को सममित रूप से व्यवस्थित किया गया है, जिसमें केंद्रीय मकबरे

के चारों ओर रास्ते, जल चैनल, तालाब और फव्वारे हैं। यह व्यवस्था मकबरे और उसके प्राकृतिक परिवेश के बीच घनिष्ठ संबंध बनाती है। इसलिए स्मारक एक अत्येष्टि स्थान और एक भूदृश्य उद्यान के कार्यों को जोड़ता है।

4.2 लिंग और स्मृति का प्रतीकवाद

बहू बेगम का मकबरा वास्तुकला के इतिहास में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक शाही महिला की स्मृति और महिला संरक्षण से जुड़ा हुआ है। इसके बड़े पैमाने और प्रमुख स्थान बहू बेगम को अवध के स्थापत्य परिदृश्य में दृश्यता प्रदान करते हैं। इसलिए यह स्मारक न केवल दफनाने की जगह का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि नवाबी दरबार की एक महिला की स्मृति और स्थिति के संरक्षण का भी प्रतिनिधित्व करता है।

गुलाब बारी स्मृति की एक अलग समझ प्रदान करती है। शुजा-उद-दौला का मकबरा बगीचों, फूलों, फव्वारों और जल चैनलों से घिरा हुआ है। ये तत्व दफन स्थल के आसपास शांतिपूर्ण माहौल बनाते हैं। यह उद्यान स्वर्ग और उसके बाद के जीवन के साथ पानी और हरियाली के फ़ारसी और इस्लामी संबंध को भी दर्शाता है। इस तरह गुलाब बाड़ी मृत्यु और स्मरण को बगीचे के अनुभव से जोड़ती है।

5. भौतिकता एवं अलंकार

बहू बेगम के मकबरे का निर्माण लखौरी ईंटों का उपयोग करके किया गया था और चूने के प्लास्टर से तैयार किया गया था, जो आमतौर पर नवाबी वास्तुकला में उपयोग की जाने वाली सामग्री है। इसका वास्तुशिल्प चरित्र काफी हद तक इसके बड़े पैमाने, संतुलित अनुपात, समरूपता और संरचनात्मक रूप पर निर्भर करता है। स्मारक में पुष्प रूपांकनों, लताएं, झरोखे, जाली और मछली रूपांकनों जैसे सजावटी तत्व भी शामिल हैं, जो इसकी विशिष्ट उपस्थिति में योगदान करते हैं।

गुलाब के बगीचों में कई प्रकार की सजावटी विशेषताएं भी शामिल हैं, विशेष रूप से पुष्प और वनस्पति डिजाइन। इसका वास्तुशिल्प चरित्र आसपास के बगीचे से निकटता से जुड़ा हुआ है। कब्रों, हरियाली, फूलों, जल चैनलों, फव्वारों और अन्य परिदृश्य तत्वों का संयोजन परिसर को एक विशिष्ट दृश्य और स्थानिक गुणवत्ता प्रदान करता है। यहां, वास्तुकला और परिदृश्य अलग-अलग तत्वों के रूप में कार्य करने के बजाय एक साथ काम करते हैं।

6. संरक्षण एवं धार्मिक सन्दर्भ

नवाबी अवध में महिला सुरक्षा की दृष्टि से बहू बेगम का मकबरा महत्वपूर्ण है। बहू बेगम ने नवाबी दरबार में एक महत्वपूर्ण पद पर कब्जा कर लिया था, और उनके मकबरे का निर्माण शाही महिलाओं की वास्तुकला और धर्मार्थ गतिविधियों में भाग लेने की क्षमता को दर्शाता है। स्मारक एक बड़ी और अत्यधिक दृश्यमान संरचना के माध्यम से उनकी स्मृति को संरक्षित करता है।

गुलाब बाड़ी नवाब शुजा-उद-दौला के संरक्षण का प्रतिनिधित्व करता है। इस परिसर की योजना सिर्फ एक मकबरे के रूप में नहीं बल्कि एक बड़े वास्तुशिल्प और उद्यान स्थान के रूप में बनाई गई थी। इसकी मस्जिद, इमामबाड़ा, उद्यान, जल चैनल और आसपास की संरचनाओं ने एक ऐसी सेटिंग बनाई जो धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों को समायोजित कर सकती थी। इसलिए यह परिसर शाही संरक्षण, धार्मिक प्रथाओं, उद्यानों और रोजमर्रा की अदालती जिंदगी के बीच संबंध को दर्शाता है।

दोनों स्मारक अवध के शिया सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेश से संबंधित हैं। उनकी अंत्येष्टि सेटिंग स्मरण, मृत्यु और उसके बाद के जीवन के विचारों को दर्शाती है, जबकि गुलाब बाड़ी में बगीचों और पानी का उपयोग शांतिपूर्ण और स्वर्गीय वातावरण के विचार को विशेष महत्व देता है।

7. समसामयिक परिस्थिति एवं संरक्षण

बहू बेगम का मकबरा फैजाबाद की स्थापत्य विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यद्यपि स्मारक संरक्षित है, इसके दीर्घकालिक संरक्षण के लिए नियमित संरचनात्मक रखरखाव और सावधानीपूर्वक संरक्षण की आवश्यकता होती है। इसका ऐतिहासिक महत्व और बहू बेगम के साथ जुड़ाव स्थानीय आगंतुकों और अवध की विरासत में रुचि रखने वाले लोगों को आकर्षित करता है। गुलाब बाड़ी भी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक है, लेकिन इसकी वास्तुकला संरचनाओं और बगीचे के रखरखाव से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आसपास के शहरी वातावरण में परिवर्तन, प्रदूषण, अतिक्रमण और अपर्याप्त रखरखाव परिसर की स्थिति को प्रभावित कर सकते हैं। बगीचों और जल चैनलों, जो इसके मूल डिजाइन का एक अनिवार्य हिस्सा हैं, को भी उचित देखभाल की आवश्यकता होती है। इसलिए गुलाब बाड़ी के संरक्षण के लिए न केवल मकबरे और प्रवेश द्वारों पर बल्कि बगीचे, जल व्यवस्था और आसपास के परिदृश्य पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

8. सैद्धांतिक निर्धारण

यह पेपर उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययनों और लिंग और अंतरिक्ष से संबंधित विचारों के माध्यम से दो स्मारकों की जांच करता है। इस दृष्टि से बहू बेगम की कब्र को महिलाओं की सुरक्षा और स्मरण की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में समझा जा सकता है। मकबरे का विशाल आकार और प्रमुख स्थान बहू बेगम और नवाबी अवध के इतिहास में उनके स्थान को स्थायी दृश्यता प्रदान करता है। इसलिए स्मारक एक दफन स्थान से कहीं अधिक का प्रतिनिधित्व करता है; यह एक शाही महिला की स्मृति और सामाजिक स्थिति को भी संरक्षित करता है।

गुलाब बाड़ी को मकबरे और बगीचे के बीच घनिष्ठ संबंध से समझा जा सकता है। इसके जल चैनल, हरियाली, फूल और खुले स्थान आसपास के परिदृश्य के साथ स्मरण के अनुभव को बढ़ाते हैं। यह परिसर अंत्येष्टि स्थलों, उद्यानों और दरबारी गतिविधियों को एक साथ लाता है, जिससे मृत्यु और स्मृति की एक अलग समझ बनती है।

साथ में, दोनों स्मारक नवाबी अवध के भीतर मृत्यु, स्मृति, शक्ति और स्थापत्य स्थान को समझने के विभिन्न तरीके प्रदान करते हैं।

9. चर्चा एवं स्पष्टीकरण

बहू बेगम के मकबरे और गुलाब बाड़ी की तुलना से पता चलता है कि अवध की वास्तुकला को एक या एक समान शैली के रूप में नहीं समझा जा सकता है। नवाबी वास्तुकला मुगल, फारसी, क्षेत्रीय और स्थानीय वास्तुकला परंपराओं की बातचीत के माध्यम से विकसित हुई।

बहू बेगम का मकबरा मुगल और ईरानी वास्तुकला के तत्वों के साथ-साथ अवध के नवाबी संदर्भ में विकसित विशेषताओं को भी प्रदर्शित करता है। इसके बड़े पैमाने, ऊर्ध्वाधर रूप, प्रवेश द्वार, खिड़कियां, जाली और सजावटी रूपांकन स्मारक को एक विशिष्ट वास्तुशिल्प चरित्र देते हैं।

गुलाब बारी फ़ारसी चारबाग परंपरा का पालन करता है और मकबरे को सावधानीपूर्वक नियोजित बगीचे में रखता है। इसके जल चैनल, फव्वारे, रास्ते और आसपास की संरचनाएं वास्तुकला और परिदृश्य के बीच घनिष्ठ संबंध बनाती हैं। यह परिसर अंतिम संस्कार, धार्मिक और सामाजिक कार्यों को भी एक साथ लाता है।

इसलिए दोनों स्मारक अपने स्थानिक चरित्र में भिन्न हैं। बहू बेगम का मकबरा अधिक लंबवत उन्मुख और स्मारकीय है, जबकि गुलाब बाड़ी बगीचे के क्षैतिज विस्तार के आसपास व्यवस्थित है। एक स्मारक पर अधिक जोर देता है, जबकि दूसरा एक व्यापक सेटिंग बनाता है जिसमें मकबरा आसपास के परिदृश्य का हिस्सा बन जाता है।

10. अध्ययन की सीमाएँ

इस अध्ययन की कुछ सीमाएँ हैं। दोनों स्मारकों पर उपलब्ध अभिलेखीय सामग्री बिखरी हुई है, और अधिकांश ऐतिहासिक जानकारी बाद के खातों और औपनिवेशिक विवरणों से आती है। गुलाब बाड़ी की वर्तमान स्थिति के कारण इसके मूल उद्यानों, वनस्पतियों और जल प्रणाली का पूरी सटीकता के साथ पुनर्निर्माण करना भी मुश्किल हो गया है।

स्थानीय मौखिक परंपराएँ स्मारकों के बारे में उपयोगी जानकारी प्रदान करती हैं, लेकिन इन खातों की तुलना ऐतिहासिक और अभिलेखीय स्रोतों से करने की आवश्यकता है। नवाबी काल के दौरान वास्तुशिल्प संरक्षण में महिलाओं की भूमिका को समझने और भारतीय वास्तुकला के व्यापक इतिहास में बहू बेगम के योगदान को रखने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है।

11. निष्कर्ष

बहू बेगम के मकबरे और गुलाब बाड़ी की तुलना नवाबी अवध के विविध स्थापत्य और सांस्कृतिक चरित्र को प्रदर्शित करती है। यद्यपि दोनों स्मारक एक ही ऐतिहासिक और

राजनीतिक सेटिंग से संबंधित हैं, वे वास्तुकला, स्मृति, संरक्षण और परिदृश्य के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं।

बहू बेगम का मकबरा अपने विशाल पैमाने, ऊर्ध्वाधर रूप और महिला शाही संरक्षण के साथ जुड़ाव से प्रतिष्ठित है। इसके विपरीत, गुलाब बाड़ी मकबरे, चारबाग उद्यान, जल सुविधाओं और धार्मिक संरचनाओं को एक साथ लाता है, जिससे वास्तुकला और परिदृश्य के बीच घनिष्ठ संबंध बनता है।

उनके मतभेद स्थापत्य शैली से परे हैं। वे दिखाते हैं कि कैसे नवाबी अवध की इमारतें लिंग, शाही अधिकार, स्मृति, धर्म और सांस्कृतिक पहचान के विचारों को अलग-अलग तरीकों से व्यक्त कर सकती थीं। इसलिए इन स्मारकों का एक साथ अध्ययन करने से फैजाबाद के स्थापत्य इतिहास और अवध के व्यापक सांस्कृतिक परिदृश्य की गहरी समझ मिलती है।

संदर्भ और ग्रंथ सूची

1. B.Asher, Catherine. Architecture of Mughal India. Cambridge: Cambridge University Press, , 1992.
2. Koch, Ebba. Mughal Architecture: An Outline of Its History and Development (1526–1858). Oxford University Press, 1991.
3. Oudh Gazetteers, Government of India, British Records.
4. Safvi, Rana. कमाल की बहू बेगम और फैजाबाद में उनका शानदार मकबरा. <https://ranasafvi.com/the-stunning-bahu-begum-ka-maqbara-in-faizabad/>.
5. Santha, Kidambi Srinivasa. Bahu Begum and the Gendered Struggle for Power. <https://indianhistorycollective.com/bahu-begum-and-the-gendered-struggle-for-power-daulah-asaf-shuja-nawab-murtaza-faizabad-lucknowcity-jagirsinhhistory-mirza-historyofindia-womeninhistory/>.
6. एनसाइक्लोपीडिया, ब्रिटानिका. अयोध्या. जुलाई 23, 2026 . <https://www.britannica.com/topic/Ramayana-Indian-epic>.
7. मंत्रालय, छावनी परिषद अयोध्या रक्षा. छावनी परिषद अयोध्या रक्षा मंत्रालय. <https://ayodhya.cantt.gov.in/hi/%E0%A4%87%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B8/>.
8. विकिपीडिया. गुलाब बाड़ी. https://en.wikipedia.org/wiki/Gulab_Bari.
9. सीताराम, लाला. अयोध्या का इतिहास. प्रयाग: हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, 1932.